Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी
अध्याय 9
मेरा नया बचपन
सुभद्रा कुमारी चैहान

कवि परिचय

अपने समय की लोकप्रिय कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म 1904 ई. में प्रयाग में हुआ था तथा उनकी आरम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। साहित्य के प्रति उनकी रुचि बचपन से ही थी। 5 वर्ष की आयु में उन्होंने पहली कविता लिखी थी। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की तथा कई बार जेल भी गयीं। वे साहित्य और राजनीति में समान रूप से सफल रहीं।

मूलतः वे कवयित्री थीं। उनकी कविताओं में दो प्रवृत्तियाँ प्रमुख रूप से देखने को मिलती हैं- प्रथम राष्ट्रीय भावना की तो द्वितीय घरेलू जीवन की। उनकी राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त कविताओं पर समसामयिक घटनाओं , राष्ट्रप्रेम तथा संस्कृति की गहरी छाप मिलती है। उनमें काव्य प्रतिभा नैसर्गिक थी इसलिए उनकी काव्य शैली की प्रमुख विशेषता यह है कि वे जटिल-से-जटिल विषय को सहज और सरल शब्दों में व्यक्त कर देती हैं।

भाव और अभिव्यक्ति का इतना गहरा तादात्म्य बहुत कम रचनाकारों में मिलता है। बुन्देलखण्ड में गाये जाने वाले लोकगीत के छंद में 'झाँसी की रानी' जैसी ओजस्वी कविता उनकी प्रतिभा और दृष्टि दोनों की परिचायक है। इसीलिए अंग्रेज सरकार ने इस कविता को जब्त कर लिया था , पर यह लोगों को कंठस्थ थी। इस कविता की सरल किन्तु ओज भरी पंक्तियों ने हिन्दी भाषा-भाषी जनता को खूब प्रेरित किया था।

सुभद्राकुमारी चौहान ने कहानी और निबन्ध विधाओं में भी लिखा। 'बिखरे मोती' तथा 'उन्मादिनी' उनकी कहानियों के संकलन हैं उनकी कहानियों में उदात्त आदर्शवाद को अभिव्यक्ति मिली है। सुभद्राकुमारी चौहान को उनकी कहानियों पर दो बार सेकसरिया पुरस्कार' (हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से) मिला। उनके निबन्ध भी समसामयिक समस्याओं पर केन्द्रित है। इनकी मृत्यु सन् 1948 ईस्वी में हुई।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1. कवियत्री को बार-बार क्या याद आती है?

(अ) युवाकाल का जीवन
(ब) बचपन की मुधर याद
(स) जीवन खूब निराला है।
(द) मन का संताप

उत्तर: (ब)

प्रश्न 2. बचपन में कवयित्री के रोने पर काम छोड़ कर कौन आयी?

(अ) कवयित्री की सहेली

(ब) कवयित्री की माँ

(स) कवयित्री की दादी

(द) कवयित्री की बहन

उत्तर: (ब)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. कवयित्री को बपचन में आँसू के मोती आज कैसे लगते हैं?

उत्तर: कवयित्री को बपचन में आँसू के मोती आजजयमाला जैसे लगते हैं।

प्रश्न 2. कवयित्री की बिटिया कवयित्री को क्या खिलाना चाहती थी?

उत्तर: कवयित्री की बिटिया कवयित्री को मिट्टी खिलाना चाहती थी।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1."किलकारी किल्लोल मचाकर सूना घर आबाद किया" पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:किसी घर में चाहे कितने भी सदस्य क्यों ना हो लेकिन छोटे बच्चों की किलकारियां के बिना घर को सूना ही समझा जाता है। कवयित्री के जन्म से घर खुशियों से भर गया। जब वह थोड़ा बोलने, हंसने, रोने, चीखने, चिल्लाने आदि क्रियाकलाप करने लगी, तो ऐसा अनुभव होने लगा कि जैसे उन्होंने सूने घर को आबाद कर दिया हो।

प्रश्न 2.'नैने नीर युत दमक उठे' का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तरजब कवयित्री बचपन में किसी बात के कारण रुष्ट होकर रोने लगती थी तो उनकी माता सारे काम छोड़ कर उनके पास आ जाती थी। दादा जी उनको गोद में लेकर चंदा दिखाते थे। इस सबसे कवयित्री बहुत खुश होती थी। उनकी आंखों में आए आंसू मोतियों के समान चमकने लगते थे।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.मेरा नया बचपन' का सारांश लिखिए।

उत्तर:'मेरा नया बचपन' कविता सुभद्रा कुमारीचौहान की एक मनमोहक रचना है। कवयित्री ने जीवन की सबसे अधिक प्रिय, बाल्यावस्था के भाव भीगे शब्द-चित्रों से इसे सजाया है।

कवयित्री को बार-बार अपने बचपन के दिनों की मधुर यादें आती रहती हैं। उसे लगता है कि बपचन के जाने के साथ, उसके जीवन से सबसे बड़ी खुशी विदा हो गई है। बचपन का निर्भय और स्वच्छंद होकर खेलना-खाना, ऊँच-नीच और छुआ-छूत रहित मस्त जीवन आज भी उसे भूला नहीं है।

जब भी कवयित्री रोती-मचलती थी तो उसकी माँ घर के सारे काम-काज छोड़कर उसे मनाने आ जाती थी। उसके दादा भी उसे गोद में लेकर चंदा दिखाया करते थे। बचपन बीता तो पहले किशोरावस्था और फिर जवानी भी आ पहुँची। कवयित्री के हाव-भाव, गतिविधि और रुचियाँ सब कुछ बदल गए।

कवयित्री को यौवन का संघर्ष भरा जीवन उबाने लगा। विवाह के पश्चात् उसे घर सूना-सा लगने लगा। तभी उसके घर में एक बेटी ने जन्म लिया और कवयित्री की तो जैसे सारी दुनिया ही बदल गई। बिटिया की 'ओ माँ' पुकार और माँ काओ' (माँ खाओ) जैसी भोली मनुहार ने उसके जीवन में जैसे उसके बचपन को फिर से साकार कर दिया।

इस प्रकार सुभद्रा जी का बचपन नया रूप-बेटी-बनकर उन्हें फिर से मिल गया।

प्रश्न 2.जीवन में बचपन की ऐसी क्या-क्या विशेषताएँ ऐसी हैं जो हमें आज भी याद आती हैं?

उत्तर:जीवन में बाल्यावस्था का भोला और अलमस्त सौन्दर्य ऐसा है, जिसे मनुष्य कभी नहीं भूल पाता है। जब भी व्यक्ति बच्चों को अठखेलियाँ करते, रूठते, उछलते-कूदते देखता है तो उसे अपना बचपन याद आए बिना नहीं रहता।

बचपन की कुछ निजी विशेषताएँ ऐसी हैं जो आगामी जीवन में मुनष्य को दुर्लभ हो जाती हैं। ये हैं निश्चितता, बेफिक्री, अल्लहड़पन, मस्ती, भोली प्रतिक्रियाएँ, ऊँच-नीच और छुआ-छूत से दूरी, रूठना, मनाया जाना आदि।

जवानी को जीवन में बहुत महत्व दिया जाता है किन्तु जीवन की इस सौगात के साथ ही मनुष्य को चिन्ताओं, जिम्मेदारियों, चुनौतियों और संघर्षों का बोझा भी ढोना पड़ जाता है। ऐसे क्षणों में उसे बचपन की यादें बड़ी सांत्वना प्रदान करती हैं। वह चाहने लगता है कि काश उसे उसका वही भोला-भाला, अपनी धुन में मतवाला, माता-पिता के मधुर लाड़ से ओत-प्रोत बचपन, फिर से वापिस मिल जाता।

काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्याएँ-

1. बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी॥
चिंता रहित खेलना-खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छन्द।
कैसा भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद॥
ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था, छुआ-छूत किसने जानी।
बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी॥

कठिन शब्दार्थ- ***निर्भय*** = भयरहित होकर। ***स्वच्छन्द*** = बिना रोक-टोक के। ***अतुलित*** = जिसकी तुलना न की जा सके। ***छुआ-छूत*** = छूने से बचना, किसी को छूने योग्य न मानना। ***चीथड़ों*** = फटे-पुराने कपड़ों में।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **सृजन** में संकलित कविता **'मेरा नया बचपन'** से लिया गया है। इस कविता की रचयिता कवयित्री **सुभद्रा कुमारी चौहान** है। अंश में कवयित्री को अपने बचपन के समय की मधुर यादें आ रही हैं।

व्याख्या- कवयित्री कहती है कि हे बचपन मुझे तेरी याद बार-बार आती है। तू ही मेरे जीवन की सबसे आनंददायक खुशी देने वाला समय है। कवयित्री कहती है कि हे बचपन तू ही ऐसा समय था जिसमें में बिना किसी चिंता के खेलती खाती थी और निर्भय होकर स्वच्छंद रूप से घूमती थी। कवयित्री कहती है की हे बचपन तेरा वह अतुलित आनंद किसी तरह से भी भुलाया नहीं जा सकता। कवयित्री कहती है कि वह ऐसा समय था जब मुझे ऊंच-नीच का या छुआछूत का कोई ज्ञान नहीं था अर्थात किसी तरह का भेदभाव मेरे मन में नहीं था। बचपन में हम फटे पुराने कपड़ों से झोपड़ी और गुड़िया रानी का घर बनाकर खेलते थे। उस बचपन का बड़ा आनंद था।

विशेष-

(i) कवयित्री ने इन पंक्तियों में बचपन की निर्भीकता, मस्ती और स्वच्छन्दता का यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर दिया है।

(ii) कवयित्री ने संकेत किया है कि बच्चे के मन में ऊँच-नीच और छुआ-छूत जैसी कोई भावना नहीं होती। ये सभी बातें तो बड़ों के ही संकुचित मन में रहा करती हैं।

(iii) 'झोंपड़ी और चीथड़ों की रानी' कथन द्वारा कवयित्री ने बाल मनोविज्ञान में अपनी गहरी पैठ से परिचित कराया है।

(iv) भाषा अत्यन्त सरल है। कथन-शैली भावुकतापूर्ण है।

(v) "बनी हुई ..... चीथड़ों में रानी" में लोकोक्ति का प्रयोग तथा उपमा का सौन्दर्य है।

2. किए दूध के कुल्ले मैंने चूस अँगूठा सुधा पिया।
किलकारी किल्लोल मचाकर, सूना घर आबाद किया॥
रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिलाते थे।
बड़े-बड़े मोती से आँसू जयमाला पहनाते थे॥
मैं रोई, माँ काम छोड़ कर आई, मुझको उठा लिया।
झाड़-पोंछ कर चूम-चूम, गीले गालों को सुखा दिया॥

कठिन शब्दार्थ- ***दूध के कुल्ले =(मुहावरा)*** आनंदमय जीवन जीना। ***किलकारी*** = छोटे बच्चों की हर्षभरी आवाज। ***किल्लोल*** = बच्चों के खेल। ***आबाद*** = भरा-पूरा। ***जयमाला*** = विजयसूचक माला, बच्चों से रोकर अपनी बात मनवा लेना। ***सुखा दिया*** = (आँसू) होठों से पौंछ डाले।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **सृजन** में संकलित कविता **'मेरा नया बचपन'** से लिया गया है। इस कविता की रचयिता कवयित्री **सुभद्रा कुमारी चौहान** है। इस अंश में कवयित्री ने बच्चों की मधुर क्रीड़ाओं का सजीव चित्रणकिया है।

व्याख्या- कवयित्री कहती है कि बचपन में बहुत आनंद प्राप्त किए हैं और सब चीजें मेरे लिए बहुत सुलभ थी। लगता था जैसे मैंने दूध के ही कुल्ले किये हैं। अंगूठा तो इस तरह से चूसा जैसे अमृत पान कर लिया हो। मेरी किलकारी से सारा घर आबाद हो गया। मेरे हसने, रोने, चीखने से सारे घर में एक नवीन खुशी का वातावरण छा गया। कवयित्री कहती है कि बचपन में छोटी-छोटी बातों के लिए रोना और मचलना भी बड़े आनंददायक होते थे। बचपन में जो मोतियों जैसे आंसू निकलते थे वह आज जयमाला का अनुभव कराते हैं। आगे कवयित्री कहती है कि बचपन में जब मैं रोती थी तो मेरी मां अपना सारा काम छोड़कर मुझे गोदी में उठा लेती थी और मुझे झाड़ती पोंछती और मेरे गालों को चूम कर आंसुओं को सुखा देती थी। इस तरह से बचपन में बड़ा ही आनंद था।

विशेष-

(i) कवयित्री ने इस अंश में माँ-बेटी के बीच वात्सल्य भरी झाँकी का एक सजीव शब्द-चित्र अंकित कर दिया है। वात्सल्य रस के ऐसे दुर्लभ चित्र सुरदारस के अतिरिक्त अन्यत्त मिलने दुर्लभ हैं।

(ii) बिम्ब-विधान में अपनी पूर्ण कुशलता का परिचय कवयित्री ने दिया है।

(iii) भाषा में विषय और भावों के अनुसार सटीक शब्द का चुनाव हुआ है।

(iv) वर्णन शैली चित्रात्मक और भावात्मक है। दूध के कुल्ले करना, अँगूठा चूसना जैसे मुहावरे वर्णन को यथार्थता प्रदान कर रहे हैं।

(v) "बड़े-बड़े .....पहनाते थे।" में उपमा तथा 'किलकारी-किल्लोल' और 'गीले-गालों' में अनुप्रास है। बड़े-बड़े और 'चूम-चूम' में पुनरूक्ति प्रकाश अलंकार है।

(vi) सम्पूर्ण का अव्यांश पाठकों को वात्सल्य रस की धारा में नहला रहा है।

3. दादा ने चंदा दिखलाया, नैन नीर-युत दमक उठे।
धुली हुई मुस्कान देखकर, सबके चेहरे चमक उठे।
वह सुख का साम्राज्य छोड़कर, मैं मतवाली बड़ी हुई।
लुटी हुई कुछ ठगी हुई सी, दौड़ द्वार पर खड़ी हुई॥
लाज भरी आँखें थी मेरी, मन में उमंग रँगीली थी।
तान रसीली थी कानों में, मैं चंचल छैल छबीली थी॥

कठिन शब्दार्थ- ***नीर-युत*** = आँसुओं से भरे। ***धुली हुई*** = स्वच्छ, आँसुओं के बीच मुस्कराहट। ***चमक उठे*** = प्रसन्न हो गए। ***साम्राज्य*** = वातावरण। ***लुटी हुई*** = जिसका कुछ छिन गया हो। ***उमंग*** = उत्साह। ***रंगीली*** = प्रेमभरी। ***रसीली*** = मधुर। ***छैल-छबीली*** = सुंदर, बनी-ठनी।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **सृजन** में संकलित कविता **'मेरा नया बचपन'** से लिया गया है। इस कविता की रचयिता कवयित्री **सुभद्रा कुमारी चौहान** है। इस अंश में कवयित्री बचपन से किशोरावस्था की ओर बढ़ने पर अपने मन में उठने वाली भावनाओं को प्रकाशित कर रही है।

व्याख्या- कवयित्री कहती है कि जब मैं बचपन में रोने लगती थी तो सारे परिवार के लोग मेरे आस पास आ जाते थे। दादा जी मुझे अपनी गोद में लेकर चांद दिखाते थे। इससे मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहता। आंखों में आया पानी मोतियों के समान चमकने लगता था, और मुझे मुस्कुराते हुए देखकर परिवार वालों के चेहरे भी चमकने लगते थे। धीरे-धीरे मेरा बचपन चला गया। बचपन रूपी सुख का जो साम्राज्य छोड़ कर के मैं बड़ी हो गई। मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैंने अपना सारा साम्राज्य लुटा दिया और मुझे किसी ने ठग लिया है और मैं युवावस्था के द्वार पर आकर खड़ी हो गई हूं।कवयित्री कहती है कि जब मैं बड़ी हुई तो मेरी आंखों में लाज थी लेकिन मन में उत्साह भरा हुआ था। मेरे कानों में यौवनकी स्वर लहरियां गूंजने लगी थी और मैं एक चंचल छैल छबीली बनगयी थी।

विशेष-

(i) बचपन से किशोरावस्था की ओर और फिर युवावस्था की ओर बढ़ती लड़की में, जो मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आते हैं, उनका बड़ा क्रमिक और सजीव चित्रण कवयित्री ने किया है। कवयित्री को सूक्ष्म निरीक्षण मन को मोह लेने वाला है।

(ii) शब्दों द्वारा घटनाओं और दृश्यों को मन के पर्दे पर साकार कर देने में कवयित्री परम कुशल है।

(iii) रोते बच्चे को चाँद दिखाकर बहलाना, रोते-रोते बच्चे का मुस्करा उठना, आयु के मोड़ों पर स्त्री-मन में आते परिवर्तन इने सभी का कवयित्री ने यथार्थ चित्रण किया है।

(iv) 'नैन नीर-युत' 'चेहरे चमक', 'दौड़ द्वार' तथा 'छैल छबीली' में अनुप्रास 'लुटी हुई ..... खड़ी हुई में उपमा का सौन्दर्य है।

(V) भाषा सरल है। लक्षणा की छटा से मन को मुदित करती है। 'धुली हुई मुस्कान', सुख का साम्राज्य', 'लुटी हुई छबीली थी। आदि कथन इसका प्रमाण हैं।

4. दिल में एक चुभन सी थी, यह दुनिया अलबेली थी।
मन में एक पहेली थी, मैं सबके बीच अकेली थी।
मिला, खोजती थी जिसको, हे बचपन! ठगा दिया तूने।
अरे! जवानी के फंदे में, मुझको हँसा दिया तूने॥
माना, मैंने, युवाकाल का जीवन खूब निराला है।
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का उदय मोहने वाला है।

कठिन शब्दार्थ- ***चुभन-सी*** = मधुर कसक। ***अलबेली*** = अनौखी, सजी-धजी। ***पहेली*** = प्रश्न, उत्सुकता। ***अकेली*** = मन की भावना व्यक्त न कर पा रही। ***ठगा दिया*** = जवानी को सौंप दिया। ***जवानी का फंदा*** = युवावस्था की मुधर अनुभूतियाँ। ***आकांक्षा*** = इच्छा। ***पुरुषार्थ*** = पराक्रम, सामर्थ्य। ***उदय*** = उत्पन्न होना॥

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **सृजन** में संकलित कविता **'मेरा नया बचपन'** से लिया गया है। इस कविता की रचयिता कवयित्री **सुभद्रा कुमारी चौहान** है। कवियत्री ने इस अंश में युवावस्था आने पर, मन में उठने वाली मधुर भावनाओं के प्रकट किया है।

व्याख्या- कवयित्री कहती है कि जवानी में प्रवेश करते ही उसकी मनोभावनाएँ बदलने लगीं। उसके मन में एक मधुर कसक सी उठने लगी। जवानी की वह दुनिया बड़ी अनौखी और आकर्षक थी। उसके मन में जीवन को लेकर अनेक प्रश्न और उत्सुकताएँ जागने लगीं। उसे लगने लगा जैसे इतने प्रियजनों और परिजनों के बीच रहते हुए भी उसे ऐसा कोई विश्वस्त साथी नहीं मिल रहा था जिससे वह अपनी मनोभावनाओं को साझा कर सके। कवयित्री कहती है वह मन ही मन जिससे मिलने को उत्सुक थी वह यौवन उसे मिला तो सही पर उसे लगा कि बचपन ने उससे छल किया था। उसने उसे जवानी के मधुर जाल में उलझा दिया। यह ठीक है कि जवानी का समय बड़ा अनौखा होता है। इस आयु में व्यक्ति के मन में अनेक कामनाएँ जागा करती हैं। उसमें नई सामर्थ्य उत्पन्न होती है और ज्ञान में भी वृद्धि होती है। जवानी का यह समय सचमुच बड़ा मनमुग्धकारी होता है॥

विशेष-

(i) किशोरावस्था से जवानी में प्रवेश करते समय युवा हृदयों में जो भावनाएँ और अनुभूतियाँ जागा करती हैं, कवयित्री ने उनका चित्रण मन-मोहक भाषा-शैली में किया है।

(ii) बचपन के भोले-भाले जीवन की देहली लाँध कर जब मन, जवानी के प्रांगण में प्रवेश करता है तो इतनी मधुर अनुभूतियों और उत्सुकताएँ जागती हैं कि युवा को लगता है उसे ठग लिया गया है। कवयित्री ने इसी ओर संकेत किया है।

(iii) भाषा सरल है। वर्णन-शैली भावुकता प्रधान है।

(iv) 'जवानी के फंदे' में रूपक तथा 'माना मैंने' में अनुप्रास अलंकार है।

5. किन्तु यह झंझट भारी, युद्ध क्षेत्र संसार बना।
चिंता के चक्कर में पड़ कर, जीवन भी है भार बना॥
आजा बचपन एक बार फिर, दे दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली, वह अपनी प्राकृत विश्रांति॥
वह भोली सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप।
क्या आकर फिर मिटा सकेगा, तू मेरे मन का संताप।

कठिन शब्दार्थ- ***झंझट*** = व्यर्थ का बखेड़ा। ***भार*** = बोझ। ***निर्मल शांति*** = पूर्णत: बाधारहित शांति। ***प्राकृत*** = स्वाभाविक। ***विश्रांति*** = विश्राम। ***निष्पाप*** = पापरहित। ***संताप*** = कष्ट॥

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **सृजन** में संकलित कविता **'मेरा नया बचपन'** से लिया गया है। इस कविता की रचयिता कवयित्री **सुभद्रा कुमारी चौहान** है। इस अंश में कवयित्री ने जवानी को अनेक चुनौतियों से भरा एक झंझट बताया है।

व्याख्या- कवयित्री ने माना है कि युवावस्था में नई-नई कामनाओं, पुरुषार्थ और ज्ञान की वृद्धि होती है किन्तु इस आयु में बड़े झंझट भी हैं। इस अवस्था में व्यक्ति के लिए सांसारिक जीवन, एक चुनौतियों और संघर्ष से पूर्ण रणभूमि सा नजर आता है। युवावस्था नई-नई जिम्मेदारियों के आने से मन चिंतित रहता है और कभी-कभी जीवन एक बोझ-सा प्रतीत होने लगता है। कवयित्री जवानी के झंझटों से विचलित होकर बचपन को पुकार उठती है। वह पुकार उठती है-ओ! मेरे प्यारे बचपन ! तू एक बार फिर से आजा। मेरे चिंताओं से बोझिल जीवन को फिर से अपनी निर्मल शांति से भर दे। फिर से मुझे जवानी के इस थका देने वाले मार्ग पर तू मुझे वह स्वाभाविक विश्राम प्रदान कर दे, जो मन की व्याकुलता भरी वेदना को शांत कर देता है। फिर से जीवन में उसी मधुरता भरी सरलता से भर दे। मेरे जीवन से सारे कलुषों को मिटा दे। बता, क्या तू फिर से मेरे जीवन में पधारकर, मेरे व्यथित और चिंतित मन का कष्ट दूर करेगा?

विशेष-

(i) कवियत्री ने बचपन को जीवन की सबसे सुन्दर अवधि सिद्ध किया है। जवानी भले ही अनेकानेक आकर्षक भेंटों से भरी हो, पर बचपन की निर्मल विश्रान्ति के सामने से वह कहीं नहीं ठहरती। वह युवाओं को चिंताओं और झंझटों के जाल में उलझा देती है।

(ii) कवयित्री का संकेत है कि मनुष्य चमक-दमक भरी जिन्दगी की ओर दौड़ने के बजाय बचपन जैसी सरल, सहज भोली और निष्पाप जीवन शैली को अपनाए। तभी उसे जीवन के तनावों, चिंताओं और संघर्षों से मुक्ति मिल सकती है।

(iii) भाषा लक्षणा-शक्ति सम्पन्न है। वर्णन-शैली में भावुकता का पुट है।

(iv) व्याकुल व्यथा' में अनुप्रास अलंकार है।

6. मैं बचपन को बुला रही थी, बोल उठी बिटिया मेरी॥
नंदन वन-सी फूल उठी, वह छोटी-सी कुटिया मेरी॥
माँ ओ! कहकर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में, कुछ लिए हाथ में, मुझे खिलाने आई थी।
पुलक रहे थे अंग, दृगों में कौतूहल था छलक रहा।
मुँह पर भी आल्हाद लालिमा, विजय गर्व था झलक रहा।

कठिन शब्दार्थ- ***बिटिया*** = छोटी सी बेटी। ***नंदनवन*** = स्वर्ग का उद्यान। ***फूल उठी*** = फूलों से भरी गई, आनंद से परिपूर्ण हो गई। ***कुटिया*** = झोंपड़ी, घर। ***पुलक रहे*** = रोमांचित हो रहे, हर्षित हो रहे। अंग = शरीर के भाग। ***दृग*** = नेत्र। ***कौतूहल*** = आश्चर्य। ***छलक*** = प्रकट हो रहा। ***आल्हाद*** = अत्यन्त हर्ष। ***लालिमा*** = लाली॥

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **सृजन** में संकलित कविता **'मेरा नया बचपन'** से लिया गया है। इस कविता की रचयिता कवयित्री **सुभद्रा कुमारी चौहान** है। इस अंश में कवयित्री ने बताया है कि उसका बचपन फिर से आ गया है।

व्याख्या- जब वह बचपन से फिर से आने के लिए अनुरोध कर रही थी, तभी उसकी छोटी-सी बेटी अचानक उसे ओ माँ' कहकर पुकार उठी। कवयित्री ने अचानक उसकी ओर देखा तो देखती ही रह गई। बिटिया के बोलते ही ऐसा लगा कि कवयित्री का वह घर, प्रसन्नता के मारे स्वर्ग के नंदनवन के समान फूलों से भर गया हो। बेटी भी मिट्टी खाकर आई थी। कुछ मिट्टी अभी भी मुँह में थी और हाथ में भी मिट्टी थी, जिसे वह अपनी माँ को खिलाने के लिए आई थी। मिट्टी चखने का रोमांचित आनंद, उसके अंग-अंग से छलका पड़ रहा था। आँखों में भोला कौतूहल छाया हुआ था। मुख परम हर्ष से लाल हो रहा था और लगता था बिटिया को अपने मिट्टी खाने जैसे महान कार्य पर बड़ा गर्व भी हो रहा था।

विशेष-

(i) कवयित्री की मनोकामना की पूर्ति के लिए, उसका बचपन ही उसकी बेटी के रूप में मूर्तिमान होकर आ पहुँचा। उसकी निराली, भोली और कौतूहल भरी मूर्ति देखकर, कवयित्री का मनरूपी नंदनवन वात्सल्य के फलों से भर गया। काव्यांश का यह शब्द-चित्र बड़ा मन-मोहक है।

(ii) भाषा में मृदुलता है और वर्णन शैली वात्सल्य रस से सराबोर है।

(iii) बच्चों की सहज अठखेलियों का सजीव चित्रण हुआ है।

(iv) "नंदनवन-सी.....कुटिया मेरी॥" में उपमा अलंकार है।

7. मैंने पूछा, यह क्या लायी? बोल उठी वह 'माँ काओ'।
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से, मैंने कहा तुम्हीं खाओ॥
पाया मैंने बचपन फिर से, बचपन बेटी बन आया।
उसकी मंजुल मूर्ति देखकर, मुझमें नवजीवन आया।
मैं भी उसके साथ खेलती-खाती हूँ, तुतलाती हूँ।

मिलकर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ॥

जिसे खोजती थी बरसों से, अब जाकर उसको पाया।
भाग गया था मुझे छोड़कर, वह बचपन फिर से आया॥

कठिन शब्दार्थ- 'माँ काओ' = माँ खाओ। ***प्रफुल्लित*** = अत्यन्त प्रसन्न। ***मंजुल*** = सुन्दर।

संदर्भ तथा प्रसंग - प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक **सृजन** में संकलित कविता **'मेरा नया बचपन'** से लिया गया है। इस कविता की रचयिता कवयित्री **सुभद्रा कुमारी चौहान** है। इस अंश में कवयित्री ने बेटी के रूप में आपने बचपन के दर्शन किए हैं। इससे उसके जीवन में नया उत्साह उत्पन्न हो गया। जीवन का तनाव दूर हो गया। वह स्वयं भी बच्ची जैसी बनकर बेटी के साथ खेलने लगी।

व्याख्या- कवयित्री ने अपनी छोटी-सी बिटिया की तोतली बोली में सुना 'माँ खाओ'। यह सुनते ही उसका हृदय वात्सल्य से प्रफुल्लित हो उठा और उसने कहा-'बिटिया ! तुम्हीं खाओ'। इस प्रकार वह स्वयं भी बच्ची बन गई। उसे लगा कि उसका बचपन ही बेटी बनकर आ गया है। इस घटना से उत्साहित होकर वह स्वयं भी बच्ची जैसी बन गई है। अब वह बेटी के साथ खेलती और खाती और तुतलाकर ही बोलती है। बेटी की भोली बातों बौर मनहमोहक क्रीड़ाओं को देखकर वह स्वयं भी बच्ची की तरह व्यवहार किया करती है। कवयित्री को लगता है कि वह जिस बचपन को वर्षों से खोज रही थी, उसे अब उसने बेटी के रूप में पा लिया है। जो बपचन उसे छोड़ कर भाग गया था, वह फिर से वापस आ गया है।

विशेष-

(i) घर में एक बेटी के आगमन से प्रफुल्लित सुभद्राजी, आज के 'बेटी बचाओ' अभियानकर्ताओं को भी संबोधित करती दिखाई देती हैं।
(ii) बच्चों से रहित घर के सूने-पन से बेचैन रहने वालों के लिए, सुभद्रा जी की यह रचना एक नवजीवनदायिनी औषध के समान है।
(iii) सरल भाषा-शैली के माध्यम से भी साहित्य पाठकों को आनंदित किया जा सकता है, इस बात का यह काव्यांश प्रत्यक्ष प्रमाण है।
(iv) सम्पूर्ण काव्यांश वात्सल्य रस से ओत-प्रोत है।
(v) 'बचपन बेटी बन', 'मंजुल मूर्ति' तथा 'खेलती-खाती' में अनुप्रास तथा 'बचपन बेटी बन आया' में मानवीकरण है।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg